कक्षा-IX

**jkgqy lkad`R;k;u & Ygklk dh vksj**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| क्रम | मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| 1 | राहुल जी की प्रथम यात्रा से लिया गया | यह तिब्बत यात्रा 1929-30 मे नेपाल के रास्ते की थी उस समय भारतीय को तिब्बत यात्रा की अनुमति नही थी उन्होने यह यात्रा एक भीखमंगे के छदम वेश मे की थी एसमे तिब्बत की राजधानी लहसा की ओर जाने वाले दुर्गम रास्तो का वरन उन्होने बहुत रोचक शैली मे किया हे यात्रा वर्तान्त से हमे उस समय के तिब्बत समाज के बारे मे भी जानकारी मिलती हे। |
| 2 | पहला चीनी किला | सैनिक रास्ता भी था |
| 3 | थोडला | दो बार आए लेखक सुमति के जान पहचान चन के आदमी थे |
| 4 | सबसे विकट डांडा थोडला पार करना था | डांडा सबसे खतरनाक जगह हे |
| 5 | तिब्बत का सामाजिक जीवन | जाति पाँति ,छुआ छूत का सवाल नही ओर न औरते पर्दा ही करती हे हथियार का कानून न रहने के कारण यहा लोग लाठी की तरह की पिस्तोल ,बंदूक लिए फिरते हे। |
| 6 | लड्कोर | दो घोड़े किए |
| 7 | डांडे का प्रकर्तिक सोन्दर्ये | समुद्रतल से 17-18 हजार फीट ऊंचे खड़े थे पहर बिलकुल नंगे थे न बरफ ओर न हरियाली देवता का स्थान लेखक रास्ता भटक गया |
| 8 | टिड़री | पहरो से घिरा टापू सा था |
| 9 | शंकर विहार | शंकर की खेती के मुखिया भिक्षु बड़े भद्र पुरुष थे |

उपभोक्तावाद की संस्कृति- श्यामचरण दुबे

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| उपभोक्तावाद की संस्कृति | लेखक का मानना हे की हम विज्ञापन की चमक धमक के कारण वस्तुओ के पीछे भाग रहे हे हमारी निगाह गुणवत्ता पर नही हे |
| बाज़ार की गिरफ्त मे आ रहे समाज की वास्तक्विकता को प्रस्तुत करता हे स | संपन ओर अभिजन वर्ग द्वारा प्रद्रशन पूर्ण जीवन शैली अपनाई जा रही हे जिसे सामान्य जन भी ललचाई निगाहो से देखते हे |
|  | लेखक की यह बात महतव्पूर्ण हे की जसे तेसे यह दिखावे की संस्कृति फेलेगी ,सामाजिक अशांति ओर विषमता भी बढ़ेगी। |

साँवले सपनों की याद –जाबिर हुसेन

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| सलीम अली पक्षी विज्ञानी के मरने से उत्पन्न दुख ओर अवसाद को लेखक ने साँवले सपनों की याद के रूप मे वयक्त किया हे |  |
| सलीम अली का व्यक्ति चित्र प्रस्तुत किया हे | केंसर जेसी जानलेवा बीमारी उनकी मौत का कारण बनी |
| बर्ड वाचर | सलीम अली उन लोगो मे थे जो प्रकर्ति के प्रभाव मे आने की बजाय प्रकर्ति को अपने प्रभाव मे लाने के कायल होते हे |
| सलीम अली का प्रयावरण प्रेम प्रधानमंत्री से मिलन | जीवसाथी तहसीना थी स्कूल के दिनो मे सहपाठी थी सैलेंट वेली को रेगिस्तान हवा को झोंके से बचने के अनुरोध लेकर चौधरी चरण सिंह से मिले |
| सलीम अली की आत्मकथा का नाम फाल ऑफ स्पैरो |  |
| सलीम अली के जीवन की नई दिशा | बचपन के दिनो मे उनकी एयर गन से घायल होकर गिरने वाली नील कंठ की वह गोरेया सारी ज़िंदगी उन्हे खोज के नये नये रास्तो की तरफ ले जाती रही । |

**सुमित्रानंदन पंत –ग्रामश्री**

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| ग्रामश्री कविता मे पंत ने गाँव की प्राकर्तिक सुषमा ओर समृदि का मनोहारी व्याखा की हे | खेतो मे दूर तक फेली लहलहाती फसले ,फल फूलों से लदी पेड़ो की डालियाँ ओर गंगा की सुंदर रेती सुमित्रानंदन पंत को रोमांचित करती हे |

**माखन लाल चतुर्वेदी – कैदी ओर कोकिला**

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
|  |  |
| ब्रिटानी उपनिवेशवाद के शोषण तंत्र पर बारीकी विश्लेषण हे । | कवि जैल मे एकाकी ओर उदास हे । |
|  | कोयल से अपने मन का दुख असंतोष ओर ब्रितानी शासन के प्रति अपने आक्रोश को व्यक्त कराते वह कहना हे की यह समय मधुर गीत गाने का नही बल्कि मुक्ति गीत सुनाने का हे । |
| कविता मे भारतीय स्वाधीनता सैनानियों के साथ जैल मे किए गए खराब बर्ताव ओर यातनाओ का मार्मिक चित्रण प्रतुस्त किया गया हे । | कवि कहता हे कोयल भी पूरे देश को एक कारागार के रूप मे देखने लगी हे एसलिए आधी रात्री मे चीख उडी हे । कविता राष्ट्रीय भावना से युक्त हे। उनमे स्वतन्त्रता की चेतना के साथ देश के लिए त्याग बलिदान की भावना मिलती हे। |

वाख

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| ललध्य कश्मीरी कवयित्री हे एनहोने ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले अपने प्रयासो कीकी चर्चा की हे । | ईश्वर प्राप्ति के लिए किए प्रयास |
| जाति ओर धर्म की संकीन्ताओ से उपर उठकर भक्ति के रास्ते पर चलने पर ज़ोर दिया |  |
| धार्मिक आडंबरो को विरोध |  |
| प्रेम को सबसे बड़ा मूल्य बताया |  |
| मनुष्य के संभावी होने का महत्व | अत कारण मे से संभावी होने पर ही मनुष्य की चेतना व्यापक हो सकती हे । |
| मयजल मे कम से कम लिप्त होना चाहिए |  |
| कवयित्री के आत्मलोचन की अभिवयक्ति हे | भवसागर से पर जाने के लिए सद कर्म ही सहायक हे |
| ईश्वर की सर्वा व्यापकता का बोध धार्मिक भेदभाव का विरोध भाषा कश्मीरी |  |

**रसखान – सवैये**

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| कृष्ण ओर कृष्ण भूमि के प्रति कवि का अनन्या समर्पण –भाव | कृष्ण भक्त रसखान की अनुरक्ति ने केवल कृष्ण के प्रति प्रकट हुई हे बल्कि कृष्ण भूमि के प्रति भी उनका अनन्य अनुराग व्यक्त हुआ हे । |
| कृष्ण की रूप माधुरी ब्रज महिमा राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओ का मनोहर वरन्न मिलता हे | कृष्ण ओर कृष्ण भूमि के प्रति संप्रन का भाव |
| कृष्ण के रूप-सोन्दर्य के प्रति गोपियो की मुक्तता | जिसमे वे स्वयं कृष्ण का रूप धरण कर लेना चाहती हे। प्रेम की तन्मयता , भाव विठ्ल्ता ओर आसक्ति के उल्लास का वरन्न हे । |
| कृष्ण की मुरली की धुन की व्याखा | कृष्ण की मुरली की धुन ओर उनकी मुस्कान के अचूक प्रभाव तथा गोपियो की विवशता की व्याखा हे |
| रसखान के सवैये की भाषा ब्रजभाषा हे । | कृष्ण की मुस्कान मे सम्मोहक हे उससे बचा जा सकता हे। |